



कहानी



गीता शर्मा

दिन भर की भागदौड़ से त्रस्त होकर मैं जब रेलवे स्टेशन पहुंचा तो पता चला कि गाड़ी लगभग दो घंटे लेट है. उफफ! अभी भी हालात वैसे ही हैं भारतीय रेल भारतीय समय पर ही आयेगी न... एक तो पहले ही मुझे ट्रेन से यात्रा करना उबाऊ लगता है और दूसरे अगर लेट हो जाए तो मेरा पारा चढ़ जाता है.

'गाड़ी के देरी से आने का हमें खेद है...' की पुनरावृत्ति को घोंघा सुन-सुन कर मेरी खीझ बढ़ती जा रही थी. मैं अमर्यादक सा प्लेटफॉर्म पर चलकदमी करने लगा. तभी फोन की घंटी बजी दूसरी और नम्रता थी.

'कहां तक पहुंच गए?'
'कहीं नहीं यहीं फंसा हुआ हूँ...'
'क्या हुआ इतना क्यों चिढ़ रहे हो?'
'ट्रेन लेट है...'
'कोहरे के कारण हो जाता है ये सब...'
'ज्ञान मत दो मुझे... अभी फोन रखो... मैंने तलखी से फोन काटते हुए कहा, 'ट्रेन में बैठकर बात करता हूँ...'
'अरे बैठ जाइए... आपके इस तरह चक्कर लगाने से ट्रेन जल्दी थोड़ी ही आ जाएगी...'
'एवसव्यूज मी... मैंने उसकी आंखों से छलकती शरारत को देखकर कहा. 'आप थोड़ी देर बैठ जाइए शांति से... गहरी लंबी सांस लीजिए...'
'आपका गुस्सा कुछ कम होगा...'
'नहीं, मैं ऐसे ही ठीक हूँ, जब तक ट्रेन नहीं आ जाती मेरी बेवैनी बनी रहेगी, और फिर बैठकर ही तो जाना है, मैं बात को समाप्त करने के उद्देश्य से कहा.
'तो ठीक है फिर घूमते रहिए ऐसे ही... यहां से वहां... यहां से यहां... मेरा फोन फिर बज उठा. मैं वहां से दूर चला आया. इस बार फोन पर मेरी सहकर्मिणी थी. ऑफिस की राजनीति और सरकारी तंत्र को कोसते हुए शुरू हुआ संवाद प्रेम के इस्फुरत झंकार तक जा पहुंचा.
'मैंने देखा कि वो भी अपने मोबाइल में व्यस्त है. कभी फोन पर बात करती और कभी कोई गाना सुनती. बालों में सफेदी और चेहरे पर छाई झुर्रियों के बीच उसकी मधुरस्मृत कुछ पहचानी हुई सी लग रही थी. एक खुशनुमा मौसम सा आकंक्षित व्यक्तित्व. शायद मुझे घूरते हुए देखकर वह कुछ असहज हो गई. 'क्या आप घूमते-घूमते मेरे लिए पानी की एक बोतल ला देंगे?' 'हां हां क्यों नहीं?' उसका अनौपचारिक आग्रह में टाल नहीं सका. पानी की बोतल देकर अंततः मैं भी उसी बेंच पर बैठ गया.
'आप यहीं की रहने वाली हैं क्या?'
'स्त्रियों के स्थायी निवास कहां होते हैं जी? जन्म कहीं होता है

ये मोह-मोह के धागे



और जिंदगी कहीं और ब्याह देती है...'
'ओह! मेरा उद्देश्य आपको दुःख पहुंचाना नहीं था...'
'अरे नहीं... दुखों के ढेर को काहे का दुःख... अब कोई दुःख नया नहीं लगता... एक दूसरे के रिश्तेदार ही लगते हैं मुझे तो... वैसे भी दुःख तो दोस्त होते हैं और तों के, कहते हुए वह जोर से खिलखिलाकर हसने लगी.
'मैंने देखा कि उसकी आंखों की कोरों पर बूंदें आकर टिक गईं.
'आप भी इसी ट्रेन से जा रही हैं सिग्नल हो गए हैं गाड़ी आने वाली है, आपका कांच कौन सा है?' मैंने विषय परिवर्तन करते हुए पूछा.
'ट्रेन आई और हम जाकर अपनी-अपनी सीट पर जाकर बैठ गए. स्मृति कूप में डूबा हुआ मेरा मन अभी तक इस सहयात्री के चेहरे में अतीत में छिपी पहचान खोज रहा था. उग्र का पर्दा या मेरी कमजोर होती याददाश्त ने रहस्य को रहस्य बनाए रखा.
'शोड़ी देर बाद न जाने क्यों मैं उठकर उनकी सीट तक चला आया. 'आप ठीक तो हैं?' 'हम्म... 'वैसे कहां जा रही हैं?' 'मुंबई...'
'क्यों?' मैंने अनायास पूछ लिया
'हम्म... वेलेंटाइन डे आ रहा है न तो पति के पास जा रही हूँ वे मुंबई में रहते हैं...'
'वेलेंटाइन डे... आप भी... वो भी इस उम्र में...'
'क्यों? हम नहीं मना सकते हैं क्या? हमारे जमाने में तो ये सब चोचले नहीं थे, पर अब मना में क्या बुराई है?'
'नहीं बुराई तो नहीं है पर क्या जरूरत है ऐसे प्रेम प्रदर्शन की...? मेरी समझ के परे है ये बातें... 'क्यों? इसमें समझ में न आने वाली कौन सी बात है? और फिर अपनी बड़ी बड़ी आंखों में

मैं जानता हूँ कि जब से मेरी प्रेमिका मेरी पत्नी बनी है तब से इस तरह की बातें मुझे कितनी गैर जरूरी लगती हैं. पहले जिसकी हर ख्वाहिश पूरी करने के लिए धरती आसमान एक कर देता था और अब उसकी बातों से मुझे ऊब और कुढ़न होने लगी है.
'आप सच में वेलेंटाइन डे मनाते जा रही हैं?' मैंने अविश्वास जाहिर करते हुए पूछा - 'हम्म... मैं अपना पहला और शायद आखिरी वेलेंटाइन डे मनाते जा रही हूँ?' कहते कहते वो रुक गई. उनकी बातों में नमी उतर आई भीगी आवाज को संयत करके बोली. 'दरअसल क्या है न मेरे पति कैसर की चौथी स्ट्रेज से गुजर रहे हैं... कीमो थैरेपी चल रही है... तो मेरे मन में आया कि मैं उन्हें सरप्राइज दूँ.
'आई एम सो सॉरी... मुझे नहीं पता था कि आप किस मुश्किल दौर से गुजर रही हैं?'
'मुश्किलों ने तो मेरे घर पर वर्षों से डाल रखा है हर बार चली आती हैं मुंह उठाए, खिन्नी आदत हो गई है कि अब मैं टेंशन नहीं लेती.' अपने आप में इतनी अचानक किसी नवयौवना सी चहककर बोली, 'मुझे बहुत पसंद है... प्रेम का ये त्योहार... वेलेंटाइन डे... पर अफसोस कभी मना नहीं पाई. 'क्यों? आपके पति को पसंद नहीं है क्या?'
'ना ना ऐसी बात नहीं है... तो इसलिए क्योंकि मेरे पति किसी और स्त्री के साथ रहते हैं, कड़वाहट शब्दों में उतर आई थी. मुझे और भी तगड़ा झटका लगा. 'और आप उनके साथ वेलेंटाइन डे मनाते जा रही हैं?'
'जरूरत के समय उनकी नकली वेलेंटाइन छोड़ गई उन्हें... वो ठहके लगाकर हंसते-हंसते तो पड़ीं, 'अब वो बिस्कुल अकेले हो गए हैं तो...'
'तो क्या?'
'दरअसल मैं अपनी दिव्यांग बेटी के साथ इतनी व्यस्त हो गई थी कि पहले मेरी नौकरि हाथ से निकली और फिर पति... और आप उसी छोखेबाज के साथ वेलेंटाइन डे मनाते जा रही हैं?' मैंने अपना गुस्सा जाहिर किया.
'उन्होंने अपना वेलेंटाइन बदल लिया पर मेरे वेलेंटाइन तो वही है आज भी... 'जिसने आप को किसी और के लिए छोड़ दिया और आप अभी भी उनका पक्ष ले रही हैं?'
'उन्होंने मुझे छोड़ा... मैंने उन्हें नहीं...'
'ये किस तरह का लॉजिक है?'
'प्रेम में लॉजिक कहां होते हैं? कोई शर्त नहीं... कोई तर्क नहीं... प्रेम ऐसा ही तो होता है... कोई शर्त होती नहीं प्यार में... 'मेरा बेटा भी गुरसा हो रहा था कि मैं क्यों जा रही हूँ? पर मैं खुद को रोक ही नहीं पाई... बहुत नाराज रही उनसे पर जब से पता चला है मेरी सारी शिकायतें ही खत्म हो गई हैं. सूखे दरखत पर फिर से प्रेम की नन्ही-नन्ही कोपल फूट पड़ी हैं. 'वो अपनी री में बोलती जा रही हैं. 'ये मोह के धागे हैं इतनी आसानी से थोड़े ही टूटते हैं. 'किंचित सोचते हुए फिर से बोली,
'प्रेम आपको उलटा बना देता है, क्षमाशील भी... मैं उन्हें आत्मत्याग के साथ मरते हुए नहीं देख सकती... अपनी क्षमा के साथ मैं उन्हें विदा करना चाहती हूँ... हमेशा के लिए...'
'आसुओं से भीगे अपने चेहरे को अपने पल्लू से पोछते हुए रुदन भरे स्वर में कहा, 'अपने प्रेम के साथ...'

क्लास by बड़े भाई असफलता का कारण मात्र कम प्रयास नहीं होता



प्रयास में कोई कसर नहीं छोड़ी गयी फिर भी आपके हाथ में लगी तो असफलता... और आपकी इस असफलता के बाद शुरू हुआ आपके आसपास का ताना... चुभती आँखें... आपके ऊपर हंसी... अपने घर वालों का भी ऐसा ही ढंग... आपको सुनने पड़ते हैं आपके साथ वालों की सफलता का बखान और आप घोषित किये जाते हैं बहानेबाज, लापरवाह, गैरजिम्मेदार... और आपके पास सफाई देने के लिए कुछ नहीं होता... ऐसा आपके साथ भी हुआ है तो आप अकेले नहीं हैं यह सबको ही झेलना पड़ता है... आज की बात उन्हीं लोगों और शुभचिंतकों पर है जो तानों से, हंसकर बेइज्जत करके हमारे लिए अपनी फिक्र दिखाते हैं... जो असफलता को बस आपकी लापरवाही आपकी कम मेहनत को ही कारण मानते हैं... ऐसा करने वालों से अभी के एक ज्वलंत मुद्दे से सीखना चाहिए...
अभी हमारे पड़ोस देश में युद्ध छिड़ा हुआ है... अनिश्चितता बनी हुई है और हम सभी तेल और गैस के संकट से स्वयं को बचाने में जुटे हैं... चवाल मेरा यह है कि सरकार, जहाज, रास्ता, तेल गैस सब है जैसा पहले था तो तेल और गैस का संकट क्यों मंडरा रहा... बताइए?
आप कहेंगे कि तेल और गैस जिधर और जिस रास्ते से आता है उधर युद्ध चल रहा है, इसलिए...
मतलब आप यह मान रहे हैं न कि इस संकट के लिए अचानक पैदा हुई परिस्थिति जिम्मेदार है...?
तो ऐसे ही हम क्यों यह नहीं मान पाते कि हमारे प्रयास कई बार कमजोर नहीं होते लेकिन कुछ ऐसी परिस्थितियां आ जाती हैं जिससे हम सफल नहीं हो पाते... हमेशा प्रयास न होना ही असफलता का कारण नहीं होता, कुछ अन्य कारण भी परिणाम को प्रभावित कर सकते हैं...
कई बार हवा, पानी, मिट्टी, प्रकाश भी कारण होते हैं बीज के पौधा न बन पाने का... भले बीज कितना भी स्वस्थ हो...
प्रतियोगिता का युग है... हर बार कितने ही अथक प्रयास रह जाते हैं. आप ही बताइए जो आप बना चाहते थे अगर वो नहीं बन पाए तो क्या आपके प्रयास में कमी थी... आप कहेंगे नहीं और इसके लिए हजार कारण गिना देंगे कि क्यों नहीं हो पाया...
कहना यह है कि स्वयं को उनकी स्थिति पर रखकर, उन्हें समझिये उन पर अपना भरोसा दिखाइये, उनकी हिम्मत बढ़ाइए... यही आपकी सही प्रतिक्रिया होगी... ताने मारकर, उन पर हंसकर आप हम उनको मजबूत नहीं बल्कि भीतर तक टूट रहे होंगे. असफलता को उनकी दृष्टि में अभिशाप बना रहे हैं, उनकी और क्षमाओं को भी प्रभावित कर रहे होते हैं. देश काल परिस्थिति को भी ध्यान में रखिये...
और जब आप ऐसा करेंगे तब असफलताएं, सफलताओं में बदलते देखेंगे. यही एक समाज की की सार्थक पहल हो सकती है. चलिए मिलकर एक ऐसा ही समाज निर्मित करते हैं जिसमें असफलता को सीने न जाय बल्कि उसका सही कारण खोजा जाय और सीखकर उसे सफलता में बदला जाय... एक ऐसा समाज बने जिसमें प्रेरित करने की प्रवृत्ति हो... हतासाहित करने की नहीं... वो मात्र सफलता को दुलारने वाला न हो बल्कि असफलता को भी संभालने वाला हो...
बस यही कहना था, धन्यवाद

लघुकथा

खुलती राहें



संदीप तोमर

रोशनलाल की पत्नी को मरे काफ़ी समय हो गया था. उसकी मौत के समय बेटा बमुरिकल पाँच साल का था. उसने दूसरी शादी न करने का फ़ैसला किया और बच्चे को पढ़ाने-लिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी. वक्रत को न मालूम क्या मंजूर था-बच्चे ने बारहवीं की परीक्षा पास की ही थी कि भारत मिल बंद होने की खबर जंगल की आग की तरह फैल गई. इस आग में न जाने कितने घर झुलसने की कगार पर आ गए थे. रोशनलाल उसी कपड़ा मिल में चौकीदार था. मिल बंद हुई तो सभी वर्कर्स को मुआवजे की रकम मिली. अधिकांश लोगों ने नई बस रही कॉलोनियों में सस्ती दरों पर प्लॉट खरीद लिए और उन्हीं प्लॉटों पर छोटे-मोटे रोजगार भी शुरू कर दिए. रोशनलाल को बेटे के करियर की फ़िक्र सता रही थी. उसने मुआवजे के पैसों से बेटे को विदेश पढ़ाई के लिए भेजना चुना और खुद किराए के कमरे में रहकर छोटे-मोटे काम करके गुज़र-बसर करने लगा.

चार-पाँच साल पढ़ाई करने के बाद बेटे ने विदेश में ही नौकरी शुरू कर दी. बेटा अब उसके अकाउंट में कभी-कभी कुछ पैसे भेज देता और कहता— 'पिताजी, अब आपको छोटे-मोटे काम करने की जरूरत नहीं है. मैं आपको पैसे भेजता रहूँगा. जैसे ही मकान लूँगा, आपको भी यहीं बुला लूँगा.'
बेटे की बात सुनकर रोशनलाल का सीना फूल जाता. धीरे-धीरे बेटे ने पैसे भेजना बंद कर दिया. रोशनलाल को चिंता हुई, लेकिन उसने अपने अकाउंट में जमा बचत से गुज़ारा करना जारी रखा. बेटे से कोई शिकायत नहीं की.
एक दिन उसे एक अंतरराष्ट्रीय चिट्ठी मिली. खोलकर पढ़ा तो लिखा था— 'पिताजी, मैंने शादी कर ली है. खर्चें बढ़ गए हैं, इसलिए आपके अकाउंट में पैसा भेज पाने में असमर्थ हूँ. आशा है, आप मेरी विवशता समझेंगे.'
रोशनलाल की आँखें मायूसी से नम हो गईं. वह गहरी चिंता में डूबा था कि तभी किसी ने उसके कमरे के बाहर से आवाज़ लगाई. वह बाहर आया तो देखा— पड़ोस में बन रही मल्टी-स्टोरी बिल्डिंग का बिल्डर था. उसने कहा— 'रोशनलाल, हमारी बिल्डिंग बनकर तैयार हो गई है. कुछ फ्लैटों में परिवार रहने भी लगे हैं, कुछ में जल्दी ही आ जाएँगे. मुझे वहाँ एक गार्ड की जरूरत है. गार्ड रूम इस तरह बनाया गया है कि सोने, खाने और स्नान आदि की कोई परेशानी नहीं होगी. मैं तुम्हारे जैसे ईमानदार व्यक्ति को ही यह जिम्मेदारी देना चाहता हूँ. अगर तुम ही कहो तो...'
रोशनलाल की आँखों में एक चमक उभरी. वह मन-ही-मन बुदबुदाया— 'ईश्वर जब एक रास्ता बंद करता है, तो दूसरा रास्ता भी खोल देता है.' उसने उत्तर में बस हाथ जोड़ दिए, उसकी आँखें ठेकेदार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रही थीं.

व्यंग्य रचना

फटे पोस्टर का मातम



सुरेश सौरभ

एक नेता जी दुखी मन से सोशल मीडिया के कंट्रॉल में खड़े होकर रूबोंसे स्वर में कर रहे हैं— 'यह विपक्षी मुझे फूटी आँख पसंद नहीं करते, जब देखो तब कोई न कोई ऐसी-वैसी खुराफात की कवायद करते रहते हैं, जिससे हमारी पाक-साफ छवि पर बड़ा लगे, पर उनके शैतानी मंसूबे कभी कामयाब नहीं होते. आखिर मेरे पोस्टरों-बैनरों और कटआउटों ने उनका क्या बिगाड़ा था, जो नुचवा-नुचता कर फड़वा-फड़वा कर फिकवा दिए.
अपने हाथों से अपना फटा-नुचा पोस्टर दिखाते हुए, 'ऐसा भी कोई भला किसी के साथ करता है क्या?— जैसे इन लोगों ने मेरे साथ किया. पिछली बार होली की शुभकामनाओं वाले पोस्टर बड़े मन से लगवाये थे, तो उस पर भी इन लोगों ने होली खेली थी. कालिख पोती थी. गोबर पोता था, आखिर ये किस लोक के लोग हैं—आखिर इनके अंदर की सारी इंसानियत क्यों मर गयी है—आखिर इन जलनखोर विपक्षियों का हमने कौन सा गन्ना गोड़ लिया है— कौन से खेत जोत-बो कर हड़प लिए हैं—सच्चाई तो यही है कि इन लोगों को दिन प्रतिदिन हो रही हमारी तरक्की

फूटी आँखों से नहीं सुहाती. इसलिए इनके कलेजों पर मोटे-मोटे-साँप लोट रहे हैं—अजगर लोट रहे हैं.
मेरा बढ़ता जनाधार, बढ़ती प्रसिद्धि देखकर यह सब बुरी तरह जल-धुन रहे हैं—इसीलिए हताशा में, निराशा में, यह बिलकुल टपोरियों वाली हरकतों पर अमादा हो चुके हैं. मेरे विश्वस्त सूत्र बताते हैं कि गांव मोहल्ले के कुछ उठाईगीर टाइप के लौडो, लपाडो को दस-दस, बीस-बीस रुपये देकर मेरे पोस्टर फड़वाए गए. मेरे कटआउट हटवाये गए—यह घोर निंदनीय जघन्य अपराध है, किसी की बनी बनाई छवि को बिगाड़ने का, पर मेरे प्यारे भाइयों और बहनों आप लोग जरा भी इसकी चिन्ता न करें, हम इससे जरा भी विचलित होने वाले नहीं हैं—हम हमेशा जनता की सेवा करते रहेंगे, जनता के लिए हमेशा संघर्ष करते रहेंगे और ऐसे ही हम अपनी शुभकामनाओं-आशीर्वादों के पोस्टर लगावते रहेंगे, देखते हैं कितने फाड़ोंगे मेरे पोस्टर-बैनर. उनके भावुक वीडियो पर उनके चमचे और भक्त अपनी भावुक कमेंट जी भर कर उगलते रहे. उलीचते रहे. अगले दिन एक होनहार सोशल



लघु कथाएं

कार्टून



दूरी



एक वयोवृद्ध साहित्यकार बरसों से गुमनामी की जिंदगी जी रहे थे. अचानक उनके एक रचनाकार उनके एक रचनाकार दोस्त को उनकी याद आई. जो दूसरे शहर में रहते थे, उन्होंने अपने एक परिचित को यह जानने के लिए फोन किया कि वे (वयोवृद्ध साहित्यकार) कैसे हैं? परिचित व्यक्ति ने उनसे नंबर मांगा ही था, लेकिन तब तक फोन कट चुका था.

एक परिचित को यह जानने के लिए फोन किया कि वे (वयोवृद्ध साहित्यकार) कैसे हैं? परिचित व्यक्ति ने उनसे नंबर मांगा ही था, लेकिन तब तक फोन कट चुका था.

सुबह-सुबह नेता जी चाय की चुस्किचों लेते हुए समाचार पत्र पढ़ रहे थे. तभी अचानक उस पर अपना कार्टून छपा देख वे आगे बढ़ा आजीब नजरों से देख रहा था. नेताजी की टेढ़ी-मेढ़ी परछाई फर्श से दीवार तक चली गई थी; जिसमें वे बिल्कुल असली कार्टून लग रहे थे. उन्हें देखकर शेरु अपना दर्द भूल गया और मन ही मन खुश होने



आज बबूला हो उठे और चाय का कप लॉन पर सोए हुए शेरु (खॉंग) पर फेंक दिया. गर्म चाय की जलन से वह तड़प उठा. शेरु नेता जी की तरफ बहुत अजीब नजरों से देख रहा था. नेताजी की टेढ़ी-मेढ़ी परछाई फर्श से दीवार तक चली गई थी; जिसमें वे बिल्कुल असली कार्टून लग रहे थे. उन्हें देखकर शेरु अपना दर्द भूल गया और मन ही मन खुश होने